भारत में सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवर्तन @ जी20

भारत में सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवर्तन @ जी20

Editors

प्रो० (डॉ०) आभा शर्मा
डॉ० दिनेश कुमार गुप्ता

KUNAL BOOKS
New Delhi - 110002 (India)

KUNAL BOOKS
4648/21, 1st Floor, Ansari Road,
Daryaganj, New Delhi - 110002
Phones: 011-23275069, 9811043697
E-mail : kunalbooks@gmail.com
Website : www.kunalbooks.com

भारत में सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवर्तन @ जी20

प्रथम संस्करण–
© Editors
First Published 2023
ISBN : 978-81-966425-7-0
Alloted Date: 27/10/2023

[All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher].

[The opinions and views expressed are exclusively those of the authors/contributors and in no way the editor or publisher is responsible].

Published in India by Prem Singh Bisht for Kunal Books, and printed at **Trident Enterprises**, New Delhi.

20. भारत में बाल श्रम की रोकथाम 151
डॉ० प्रहलाद सिंह, डॉ० सुरेश कुमार एवं डॉ० गोविंद चावला

21. जी20: भारत में सांस्कृतिक व आर्थिक परिवर्तन 158
डॉ0 आजाद प्रताप सिंह

22. जलवायु परिवर्तन व भारत की स्थिति 167
डॉ0 पंकज कुमार जायसवाल

23. महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति सामाजिक सशक्तिकरण के परिप्रेक्ष्य में : सूरजपुर जिले के विशेष संदर्भ में 177
सुश्री एलिन एक्का एवं डॉ0 प्रदीप एक्का

24. भारतीय ज्ञान परम्परा और हिन्दी साहित्य : एक अवलोकन 185
डॉ0 सत्येन्द्र सिंह

25. भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 195
डॉ. शरद कुमार देवांगन

26. भारतीय युवा और समावेशी विकास 207
मनीषा सिंह

27. भारत में महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम 211
डॉ0 रश्मि

28. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में राष्ट्रीय शक्ति की संकल्पना 217
श्री बंशीलाल

29. एक जनपद–एक उत्पाद (ओ0डी0ओ0पी0): उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले का एक अध्ययन 226
दीपिका साहू एवं डॉ0 निशी मिश्रा

30. जी–20, वसुधैव कुटुम्बकम, एक पृथ्वी, एक परिवार एक भविष्य 233
अनुज कुमार सिंह

31. हिन्दी साहित्य और भारतीय ज्ञान परम्परा 242
डॉ0 अनिल कुमार एवं सविता यादव

अध्याय

23

महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति सामाजिक सशक्तिकरण के परिप्रेक्ष्य में : सूरजपुर जिले के विशेष संदर्भ में

सुश्री एलिन एक्का
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय कालिदास महाविद्यालय प्रतापपुर, जिला सूरजपुर, छ0ग0
डॉ0 प्रदीप एक्का,
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय राजीव गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय अम्बिकापुर जिला सरगुजा, छ0 ग0

सारांश

महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया से है जिसका सम्बंध महिलाओं के लिये सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता समानता तथा एकीकृत सामाजिक विकास के विचार से है। इसका उद्देश्य महिलाओं को सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक स्तर पर आत्मनिर्भर बना कर उनकी शक्ति में इस तरह वृद्धि करना है जिससे समाज फैली हुई लिंग पर आधारित विषमताओं को दूर किया जा सके। सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा महिलाओं मे एक ऐसी जागरूकता उत्पन्न की जाती है कि वे आत्मनिर्भर बनकर अपनी प्रास्थिति को उँचा उठाने के साथ ही आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन में सक्रिय भागीदारी कर सकें। वास्तव में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा नारी मुक्ति की अवधारणा से भिन्न है। महिला सशक्तिकरण की प्रकृति इस तरह के व्यवहारों से बहुत अलग है। सशक्तिकरण का अर्थ समाज मे इस तरह बदलाव करना है कि महिलाओं की एक सकारात्मक भागीदारी हो व उन्हें आसमानता व शोशण से सुरक्षा दी जाये। इस तरह महिला

सशक्तिकरण सामाजिक व्यवस्था से संबंधित एक गुणात्मक परिवर्तन है। इस प्रकार महिलाओं को उनकी परम्परागत निर्योग्यताओं से छुटकारा दिलाना सामाजिक व आर्थिक कानूनों के द्वारा महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार देना तथा विकास के द्वारा महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार करना महिला सशक्तिकरण के आधार है।

कुंजी शब्दः सशक्तिकरण, नारी मुक्ति, सामाजिक दासता

प्रस्तावना

भारतीय समाज और संस्कृति के इतिहास में महिलाओं की प्रास्थिति का प्रत्यक्ष संबंध यहॉ की सामाजिक धार्मिक तथा राजनैतिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों से रहा है भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् संविधान और नए सामाजिक अधिनियमों के द्वारा जीवन के सभी क्षेत्रों में स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार दिये गये, लेकिन पुरूषों का अहम आज भी व्यवहारिक रूप में उन्हे वे अधिकार देने के पक्ष में नहीं है जिसकी महिलाएं वास्तव में हकदार है। इसके बावजूद यह सच है कि नगरों में स्त्रियों ने सामाजिक और आर्थिक दासता के पुराने बंधनों को तोड़कर सफलताएँ प्राप्त की है। इस दृष्टिकोण से आज स्त्रियों में वो प्रमुख परिवर्तन हुये हैं[1] उन्हे निम्नांकित रूप में देखा जाता है–

1 स्त्री – शिक्षा में वृद्धि

2 आर्थिक क्षेत्र में प्रगति

3 राजनीतिक चेतना का विकास

4 वैवाहिक और पारिवारिक अधिकारों में वृद्धि

5 सामाजिक जागरुकता

यह सत्य है कि हमारे देश की जनसंख्या का आधा हिस्सा महिलाएँ है। जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं के योगदान को स्वीकार किया गया है क्योंकि महिला एवं पुरूष विकास रूपी गाड़ी के दो पहिये है। महिलाएं राष्ट्र के विकास में उतना ही महत्व रखती हैं, जितना की पुरूष। अतः देश का समग्र विकास महिलाओं की भागीदारी के बगैर संभव नहीं है। आज के वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण एक विशेष चर्चा का विषय है। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ उनके आर्थिक फैसले आय संपत्ति और दूसरे वस्तुओं की उपलब्धता से है, इन सुविधाओं के द्वारा ही वह अपने सामाजिक स्तर को ऊॅचा कर सकती है। सशक्तिरकण एक

प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जागरूकता कार्यशीलता बेहतर नियंत्रण के लिये प्रयास के द्वारा ही वह अपने विषय में निर्णय लेने के लिये समर्थ एवं स्वतंत्र होता है। एक राष्ट्र का सर्वांगीण विकास तभी संभव होता है जब महिलाओं को समाज में उनका यथोचित स्थान व पद दिया जाये। उन्हे पुरूषों के साथ–साथ विकास की सहभागी माना जाए[2]।

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही नारी को पुरूष के समान अधिकार प्रदान किये गये है। महिलाओं को अपने जीवन की गरिमा को सुरक्षित रखने और सम्मानित जीवन जीने का पूर्ण अधिकार प्रदान किया गया है। यहॉ तक की शिक्षा व ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र में भी नारी को अपनी प्रतिभा दिखाने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान किया गया है। महाभारत काल के बाद नारी की इस स्थिति में अत्यंत गिरावट आयी। उससे शिक्षा का मौलिक अधिकार छीन लिया गया। इस प्रकार धीरे – धीरे नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय एवं चिंताजनक हो गई[3]।

वर्तमान में देखें तो समय के साथ–साथ महिलाओं की स्थितियों में व्यापक बदलाव आ रहा है। दमन दलन से मुक्त होकर नारी जागरूक हो रहीं हैं। आज नारी विकास की ओर अग्रसर है। वह हर क्षेत्र में अपनी अनोखी पहचान बना रहीं हैं। पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहीं हैं। यह आधुनिक व वर्तमान युग की नारी का स्वरूप है। बदलते समय के साथ आधुनिक युग की नारी पढ़ लिख कर स्वतंत्र है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं तथा स्वंय अपना निर्णय लेती हैं। अब वह हर घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर देश के लिए विशेष महत्वपूर्ण कार्य करती है। भारत में ऐसी महिलाओं की कमी नही है जिन्होने समाज में बदलाव और महिला सम्मान के लिये अपने अंदर के डर को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया[4]।

आज देश में नारी शक्ति को सभी दृष्टि से सशक्त बनाने के प्रयास किये जा रहे है। इसका परिणाम भी देखने को मिल रहा है। आज देश की महिलाएं जागरूक हो चुकी है। आज की महिला ने उस सोच को बदल दिया है कि वह घर और परिवार की ही जिम्मेदारी को बेहतर निभा सकती है। आज महिला पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर छोटे–बड़े हर कार्य क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे है फिर चाहे काम मजदूरी का हो या अंतरिक्ष में जाने का। महिलाएं अपनी योग्यता हर क्षेत्र में साबित कर रही हैं[5]।

पूर्व में किये गये कार्यो की संक्षिप्त समीक्षा

महिला सशक्तिकरण से जुड़े सामाजिक आर्थिक राजनैतिक और कानूनी मुद्दों पर संवेदनशीलता और सरोकार व्यक्त किया जाता है। वैश्विक स्तर पर नारीवादी आंदोलनों और यूएनडीपी आदि अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने महिलाओं के सामाजिक समता स्वतंत्रता और न्याय के राजनीतिक अधिकारों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। संविधान न केवल महिलाओं को समानता की गारंटी देता है, बल्कि राज्य को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव के उपाय करने की शक्ति भी प्रदान करता है ताकि उनके संचयी सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक अलाभ की स्थिति को कम किया जा सके[6]।

महिलाओं को लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किये जाने (अनुच्छेद 15) और विधि के समक्ष संरक्षण (अनुच्छेद 14) का मूल आधार है। संविधान में प्रत्येक नागरिक के लिये यह मूल कर्तव्य निर्धारित किया गया है कि वह महिलाओं की गरिमा के विरूद्ध प्रचलित अपमानजनक प्रथाओं का त्याग करे[7]।

उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध पत्र में महिलाओं के शिक्षा के निम्न उद्देश्य है :–

- सूरजपुर जिले के संदर्भ में महिलाओं के सशक्तिकरण की यथार्थ स्थिति का पता लगाना।
- मानवीय मूल्यों का निर्माण और विकास अंधविश्वास एवं कुरीतियों को समाप्त कर नई परंपरा विकसित करना।
- महिलाओं को सामाजिक क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिये ज्ञान का प्रसार करना।
- सामाजिक जीवन पर आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के प्रभावों का अध्ययन करना।
- शिक्षा के द्वारा महिलाओं को ज्ञान का विकास होगा, महिला सशक्त होंगी जिससे की देश प्रगति की ओर आगे बढेगा।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति शिक्षा के द्वारा महिला स्वंय को सामाजिक स्तर पर सशक्त बना सकती है। इस तथ्य को स्पष्ट करने का प्रयत्न इस शोध पत्र के माध्यम से किया गया है। महिला सशक्तिकरण की योजनाओं में केंन्द्र सरकार द्वारा बालिका योजनाएँ बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना बालिका समृद्धि योजना माध्यमिक शिक्षा के लिये लड़कियों के लिये प्रोत्साहन की राष्ट्रीय योजना बनाये गये है। उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति शिक्षा के द्वारा महिला स्वंय को समाजिक राजनैतिक स्तर पर सशक्त बना सकती है। इस तथ्य को स्पष्ट करने का प्रयत्न इस शोध पत्र के माध्यम से किया गया है।

शोध परिकल्पना –

व्यापक अर्थ में शोध अभिकल्प या शोध प्रारूप किसी आनुभविक अध्ययन को आरंभ करने के पूर्व उसको सम्पन्न करने की सम्पूर्ण प्रक्रिया की पूर्व सोचित एवं नियोजित रूप रेखा है। परिकल्पना से आसय उस कथन से होता है जो सिद्ध होने पर सिद्धान्त के रूप में बदल जाता है Hypothesis कहा जाता है, यहॉ Hypo से आसय संभावित व Thesis का आसय समाधान से है। इस प्रकार संभावित समाधान ही परिकल्पना है। सामाजिक क्षेत्र में आने से महिलाओं के सामाजिक संरचना एवं समाज में बदलाव आया है। महिलाओं के समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आने से समाज मे अस्पृश्यता का अंत हुआ है।

भारत की आधी आबादी महिलाओं की है और विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार अगर महिला श्रम में योगदान दें तो भारत की विकास दर दहाई की संख्या में होगी। हम लोकतंत्र में जी रहे हैं और हम एक तरफ कहते है कि हमारा देश सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है पर उस देश की आधी आबादी का तो लोग सुनने को तैयार नहीं है लोकतंत्र को हम तभी लोकतंत्र कहेंगे जब देश का प्रत्येक नागरीक जो न केवल पुरूष के रूप में बल्कि महिलाओं के रूप में भी अपनी भागीदारी को सुनिश्चित करें। समाज की लगभग आधी आबादी होकर भी इसका प्रतिनिधित्व बहुत कम है। 19 वीं सदी में महिला आंदोलन था इसमें पर्दा प्रथा बाल विवाह, शिक्षा का अभाव, संपत्ति के अधिकारों में समानता, सती प्रथा बहु पत्नी प्रथा, विधवा पुनर्विवाह आदि महिलाओं की निम्न स्थिति हेतु उत्तरदायी कारक थे। 19 वीं सदी से लेकर वर्तमान समय तक महिलाओं से संबंधित विषयों व उनकी स्थिति में सुधार के लिये समय–समय पर अनेक आंदोलन किये जाते है[8]।

20वीं सदी में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हो गयी थी। क्रांतिकारियों ने महिलाओं की भूमिका मजबूत करने के लिये कई तरीकों से कदम उठाये। 21 वीं सदी में महिलाओं से जुड़े मुद्दे तैयार किये गये। महिलाओं की स्थिति में सुधार की अपेक्षा सशक्तिकरण पर अधिक बल दिया गया। 19वीं सदी व 20 वी सदी में जहॉ विशेष रूप से सामाजिक स्थिति में सुधारों पर अधिक बल दिया गया। वहीं वर्तमान में राजनीतिक व आर्थिक जैसे प्रश्नों को भी महत्व दिया गया। महिला सशक्तिकरण के कारण महिला देश में सख्त रही हैं जिसका की वह पहले से हकदार थीं। महिला सशक्तिकरण के कारण महिलाओं की जिंदगी में काफी बदलाव हुये हैं। जैसे– प्रत्येक कार्य में महिला बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेना शुरू किया है। महिला अपनी जिंदगी से जुड़े फैसले खुद कर सकती हैं। महिला अपने हक के लिये लड़ने लगी

हैं व धीरे–धीरे आत्मनिर्भर बनती जा रहीं है। इस तरह से देखा जाये तो महिला स्वंय आत्मनिर्भर बनकर जीवन के हर क्षेत्र में बढ़–चढ़ कर हिस्सा ले रहीं है व आगे बढ़ रहीं है[9]।

समाजिक परिणाम –

- महिलाओं के समाज में रहने से काफी सुधार हुये हैं। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से 20 प्रतिशत वृहद समाजों का जन्म हुआ है।
- महिलाओं के समाज में रहने से परम्परागत पदों के महत्व में कमी हुई है वहीं अर्जित पदों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है।
- समाज में महिलाओं के द्वारा परिवार के हर सदस्य का विकास आसानी से हो रहा है। एक महिला परिवार में सभी चीजों के लिये बेहद जिम्मेदार मानी जाती है अतः वो सभी समस्याओं का समाधान अच्छी तरह से कर सकती है।
- भारत में कई औरतें सामाजिक अलगाव से भरा जीवन जीती है। सामाजिक संबंधों के अभाव में औरतों को कई तरह का नुकसान उठाना पडता है, खासकर परिवार नियोजन के संदर्भ में परन्तु धीरे–धीरे उनके जीवन के हर क्षेत्र में काफी बदलाव हुए है।
- महिला सशक्तिकरण की सबसे सकारात्मक रूप यह है कि इससे किसी भी क्षेत्र में चाहे वह सामाजिक हो या राजनैतिक प्रत्येक रूप में महिला कार्यरत हैं वह समाज में रहकर अपनी जिम्मेदारी से अवगत हो रहे हैं यह भी सामाजिक व्यवस्था का ही परिणाम है।

सुझाव

भारत की दृष्टि से देखें तो महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय है उनकी स्थिति को बेहतर बनाने के लिये निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं –

01. महिला सशक्तिकरण में ये ताकत होती है कि वो समाज और देश में बहुत कुछ बदल सके। वो समाज में किसी भी समस्या को पुरूषों से बेहतर ढंग से निपट सकती है।
02. महिला देश और परिवार के लिये अत्यंत आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण यह सुनिष्चित करने से अधिक शामिल हैं कि महिलाओं को उनका मूल अधिकार मिले। महिला सशक्तिकरण में स्वतंत्रता समानता के साथ – साथ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी शामिल है।

03. महिला सशक्तिकरण के बिना अन्याय लैंगिक पक्षपात व असमानता को दूर नहीं किया जा सकता है। यदि महिलाएँ सशक्त नहीं होंगी तो वे अपनी खुद की पहचान विकसित नहीं कर सकती हैं।

04. भारत में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन अनेक दशाओं का संयुक्त परिणाम है जैसे – सुधार आंदोलन महिला आंदोलन, संवैधानिक अधिकार, शिक्षा का प्रसार, राजनीतिक सहभागिता, संयुक्त परिवारों का विघटन, स्त्रियों की आर्थिक सहभागिता, पश्चिमी मूल्यों का प्रभाव तथा नगरीकरण आदि।

उपसंहार

एक पितृसत्तात्मक व्यवस्था में व्यवहारिक रूप से स्त्रियॉ एक वर्ग के रूप में उन अधिकारों और सुविधाओं से वंचित रही हैं, जो साधारणतया पुरूषों को प्राप्त होते रहे है। यह बात उन सभी धार्मिक समुदायों जातियों और वर्गों के लिये सच हैं कि जिनकी प्रणाली सामन्तवादी विचारों से प्रभावित है। अधिकांश व्यक्ति स्त्रियों द्वारा नौकरी करने उच्च शिक्षाग्रहण करने अथवा परिवार के प्रबंध में हस्तक्षेप करने को न केवल संदेह की दृष्टि से देखते हैं बल्कि इसे अपने अहम के विरूद्ध भी मानते हैं। अनेक महिला संगठन द्वारा चलाए जाने वाले आन्दोलन भी उनकी प्रास्थिति में अधिक परिवर्तन नहीं ला सके। इन दशाओं के बीच यह जानना आवश्यक हो जाता है कि भारतीय समाज में समय – समय पर स्त्रियों की प्रस्थिति में किस प्रकार परिवर्तन हुये तथा वर्तमान युग के समताकारी मूल्यों तथा उनकी प्रास्थिति में कुछ रचनात्मक परिवर्तन होने के बाद भी महिलाओं का जीवन आज भिन्न समस्याओं से प्रभावित है।

जिस तरह भारतीय समाज और संस्कृति के इतिहास में महिलाओं की प्रस्थिति का प्रत्यक्ष सम्बंध यहॉ की सामाजिक धार्मिक तथा राजनैतिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तनों से रहा है। वैदिक काल को स्त्रियों की प्रास्थिति के दृष्टिकोण से भारत का स्वार्णिम युग माना जाता है। इस समान स्त्रियों के अधिकार पुरूषों के समान थे। उत्तर वैदिक काल के अंतर्गत जैन और बौद्ध सम्राटों ने स्त्रियों को सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की पूरी स्वतंत्रता दी। धर्मशास्त्र काल का आरंभ ईसा के लगभग 200 वर्ष बाद से आरंभ हुआ। मनुस्मृति में यह व्यवस्था दी गयी कि स्त्रियों का अपना कोई नहीं होता। उन्हे बचपन में पिता, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र के संरक्षण में रहना आवश्यक है।

निष्कर्ष

हमारे समाज में महिलाओं का बहुत महत्व है। उनके पास नौकरियाँ हैं और वे राजनीति, संस्कृति और धन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में निर्णय लेने में मदद करते हैं। षहरों और ग्रामीण इलाकों में अधिक से अधिक महिलाएं राजनीति के बारे में सीख रही हैं और इसमें शामिल हो रही हैं। वे विभिन्न स्तरों पर सरकार में भी भाग ले रहे हैं। जब महिलाएं सषक्त होंगी तो हमारा समाज भी सषक्त होगा। महिलाओं को मजबूत बनाने के लिए उन्हें षिक्षित करना जरूरी है ताकि वे अपने अधिकारों को जान सकें और हमारे समाज और देश को बेहतर बनाने में मदद कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. CHAUDHARY, D. P. K. (2022). Womens Harassment-A Curse (Naari Utpeedan-ek Abhishap). SHREE VINAYAK PUBLICATION.
2. Janakarajan, S., Venkatachalam, L., & Saleth, R. M. (Eds.). (2019). Bhaarateey Arthavyavastha ka Sankraman Kaal: CT Kuriyan ke Sammaan Mein Nibandh-sankalan. SAGE Publishing India.
3. Chaudhary, N. (2019). Naari Deh Ke Virudh Hinsa. SAGE Publishing India.
4. Thorāta, V. (2008). Dalita sāhitya kā strīvādī svara. Anamika Pub & Distributors.
5. Sharma, V. (2023). Dr Parshuram Shukla Bihari Ji Ke Samagra Sahitya Ka Aalochnatmak Anushilan. BFC Publications.
6. Bandyopadhyay, D. (2007). Mahilā pañcāyata sadasyoṃ kā saśaktikaraṇa. Concept Publishing Company.
7. Janakarajan, S., Venkatachalam, L., & Saleth, R. M. (Eds.). (2019). Bhaarateey Arthavyavastha ka Sankraman Kaal: CT Kuriyan ke Sammaan Mein Nibandh-sankalan. SAGE Publishing India.
8. Chalam, K. S. (2016). Arthik Sudhar aur Samajik Apvarjan: Bhaarat Mein Upekshit Samuhon Par Udareekaran Ka Prabhav. SAGE Publishing India.
9. Narayan, B. (2018). Khandit Akhyan: Bharatiya Jantantra mein Adrishya Log. Oxford University Press.